डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र एवं बीए प्रथम खंड ऐच्छिकहिंदी, प्रथम पत्र

छायावाद युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि –

द्विवेदी युग के पश्चात आधुनिक हिंदी साहित्य के तीसरे कालखंड को काव्य के क्षेत्र में 'छायावाद' की संज्ञा दी गई है। आधुनिक हिंदी कविता के क्षेत्र में छायावाद का उल्लेख 1918 के आसपास होने लगता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसे रवींद्रनाथ ठाकुर की कविताओं के प्रभाव से आया हुआ मानते थे और इसका संबंध ईसाई संतों के फैंटेसमाटा (छायाभास) शब्द से जोड़ते थे। उन्होंने छायावाद को चित्र भाषा – शैली भी कहा। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद का संबंध युगबोध से जोड़ा है साथ ही छायावाद को व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान कहा है। डॉ. नगेंद्र ने छायावाद को स्थूल के विरुद्ध सूक्ष्म का विद्रोह कहा है। छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

1.व्यक्तिवाद का प्राधान्य –

आधुनिक युग में आकर हिंदी साहित्य में पहली बार देवता और राजा से अलग हटकर सामान्य व्यक्ति को साहित्य में स्थान मिला। छायावाद तक आते – आते यह प्रवृत्ति और प्रबल हुई। छायावादी काव्य में व्यक्तिवाद को पहली बार प्रधानता मिल पाई। किसी एक व्यक्ति की अनुभूति को काव्य में स्थान प्राप्त होना संभव हो सका।

2. कल्पना का आधिक्य – छायावादी काव्य में कल्पना को प्रमुख स्थान प्राप्त हो पाया। कवि ने अपनी कल्पनाओं को पंख लगा दिए। सुमित्रा नंदन पंत, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, निराला जैसे छायावाद के चार स्तंभ कहे जाने वाले कवियों के काव्य में कल्पना के अनेक मनोरम चित्र दिखाई देते हैं।

3. जिज्ञासा को महत्व – छायावादी काव्य में जिज्ञासा को विशेष महत्व दिया गया है। भक्तिकालीन ज्ञानमार्गी एवं प्रेममार्गी कवियों एवं ने उस परम सत्ता के प्रति प्रेम – निवेदन किया है। छायावादी कवियों ने भी अज्ञात सत्ता के प्रति जिज्ञासा की अभिव्यक्ति की है और उसके प्रति प्रेम भावों की अभिव्यक्ति भी की है।

4. नवीन दृष्टि – छायावादी कवियों ने पूर्व परिचित व्यक्तियों, वस्तुओं और दृश्यों को नवीन दृष्टि से देखा है।

5. स्वाधीनता – आंदोलन से जुड़ाव – छायावादी काव्य का स्वाधीनता आंदोलन से बहुत गहरा संबंध है। छायावादी काव्य के माध्यम से लोगों को देश की परिस्थितियों के प्रति जागरूक बनाया गया है –

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से

प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयंप्रभा समुज्जवला

स्वतंत्रता पुकारती।"

6. नारी एवं प्रकृति को विशेष स्थान – छायावादी काव्य में प्रकृति एवं नारी को विशेष स्थान मिला है। अनेक स्थान पर प्रकृति को नारी के रूप में चित्रित किया गया है –

"मेघमय आसमान से

उतर रही है

वह संध्या – सुंदरी

परी सी

धीरे धीरे धीरे।"

7. कोमलकांत पदावली का काव्य -छायावादी काव्य कोमलकांत पदावली का काव्य है। शब्द – संयोजन से काव्यभाषा अद्भुत सौंदर्य, माधुर्य और चमत्कार उत्पन्न करती है।

8. छंद एवं मुक्त छंद – छायावादी काव्य भावपक्ष एवं शिल्प पक्ष दोनों ही दृष्टि से परिनिष्ठित काव्य है। छायावादी काव्य का शिल्प – सौंदर्य एक ओर छंदों के साथ है तो दूसरी ओर मुक्त छंद के साथ भी है। कवि निराला ने कहा है-

"मनुष्य की मुक्ति के समान कविता की भी मुक्ति होनी चाहिए। मनुष्य की मुक्ति है कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना और कविता की मुक्ति है छंदों के बंधन से छुटकारा पाना।"

छायावाद के प्रमुख कवि हैं –सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला। इन चारों कवियों को छायावाद के चार स्तंभ कहा जाता है।